Class - I.Com XII
Subject - EPS
Topic - Concept of Marketing
Lecture - 08
Prepared by - Dr C P Sahu
Marwari College - Darbhanga

विपणन या बाजार की अवधारणा :-

विपणन का व्यापक अर्थ होता है जो किसी वस्तु के उत्पादन के लिए कल्पना मात्र से ही शुरू हो जाता है और विक्रय के बाद भी चलता रहता है। और कभी भी समाप्त नहीं होता जिसमें वस्तु के उत्पादन के पहले शोधकार्य करना, उत्पाद नियोजन करना, मूल्य का निर्धारण करना, विपणन संचार एवं वितरण माध्यम का चुनाव करना तथा बिक्री के बाद सेवा प्रदान करना तथा सूचनाओं को एकत्रित करना आदि क्रियाएँ विपणन के अन्तर्गत चलती रहती हैं।

विपणन चक्र (Cycle)

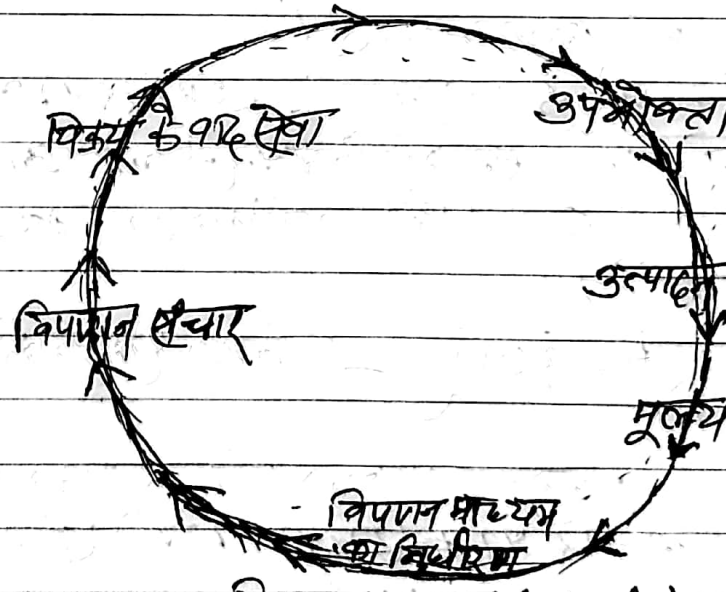

इस प्रकार विपणन क्रियाएँ हमेशा गतिशील रहती हैं और एक-दूसरे का चक्कर लगाती रहती हैं। विपणन के अवधारणा को दो भागों में बाँट सकते हैं —

(1) परम्परागत तथा संकुचित विचारधारा :-

प्रो० पाइल के अनुसार "विपणन में क्रय एवं विक्रय दोनों क्रियाएँ शामिल होती हैं।"

डेविड के अनुसार – "विपणन वह एक आर्थिक क्रिया है जिसके द्वारा वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय किया जाता है और उनके मूल्य

Scanned with CamScanner

मुद्रा में क्रय किये जाते हैं।"

स्टैण्टन के अनुसार – "विपणन अर्थशास्त्र का वह भाग है जिसमें स्थान, समय एवं अधिकार उपयोगिताओं की उत्पत्ति का अध्ययन किया जाता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि

(1) पुरानी विचारधारा में उपभोक्ता कल्याण एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के विचारों की ~~अवहेलना~~ अवहेलना की गयी है।

(2) वस्तु विक्रय के बाद कोई भी सेवा कार्य नहीं किया जाता है।

(3) इसमें उपभोक्ताओं की इच्छाओं पर ध्यान नहीं दिया जाता है।

(2) विपणन की आधुनिक विचारधारा :– आधुनिक एवं विस्तृत विचारधारा निम्नलिखित हैं :–

गोवानी के अनुसार :– "विपणन एक व्यावसायिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा बाजारों की आवश्यकताओं के अनुरूप वस्तुओं का निर्माण किया जाता है तथा उनके स्वामित्व का हस्तांतरण किया जाता है।"

प्रो० मैकार्थी के अनुसार – उपभोक्ताओं के अनुरूप उत्पादन योजनाओं को समायोजित करने की आवश्यकता का आयामों द्वारा दिया जाने वाला उत्तर विपणन कहलाता है।"

प्रो० मजूर के अनुसार :– "विपणन समाज को जीवन स्तर प्रदान करता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के अध्ययन करने के बाद निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि

(1) उपभोक्ता कल्याण एवं सामाजिक उत्तरदायित्व पर अधिक ध्यान दिया गया है।

(2) इसमें उपभोक्ताओं के इच्छा को ध्यान में रखकर वस्तुओं का निर्माण किया जाता है।

(3) इसमें ग्राहकों की सन्तुष्टि पर अधिक बल दिया गया है।

इस प्रकार विपणन का अर्थ व्यापक है जिसके उत्पादन से लेकर उपभोग तक की सभी क्रियाएँ उपभोक्ताओं की इच्छा के अनुसार करने, वस्तुओं का उत्पादन करने, लोगों के रहन सहन के स्तर को सुधार और उपभोक्ता को सन्तुष्ट करते हुए उचित लाभ कमाने से है।